पत्रिका TV RAJASTHAN
प्रात: 8:00 एजेंडा टुडे
प्रात: 9:00 जयपुर प्लस
प्रात: 11:30 ग्राउंड रिपोर्ट
देखने के लिए... रेडिएन्ट: 345 . डेन : 332 . टाटा स्काई : 581 . एयरटेल : 353 . हैथवे : 218

गांधी सेवा सदन में 'गांधी कथा' सुनने उमड़े विद्यार्थी और शहरवासी

'गांधीजी का जीवन श्रद्धा और पुरुषार्थ का महाकाव्य'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

राजसमंद. महात्मा गांधी को जो अच्छा लगता उसे वे स्वीकारते और उस मार्ग पर चल पड़ते थे। विदेश जाने से पूर्व उन्होंने अपने सहपाठियों के मध्य ज्ञान, कर्म और भक्ति से युक्त भाषण दिया तो ब्रिटेन प्रवास के प्रथम माह में ही उन्हें सोचने को विवश कर दिया कि मैं कौन हूं और मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है ? उनका जीवन श्रम और संयम का प्रतीक था।

गांधी सेवा सदन में बापू के प्रिय भजनों, धुनों एवं जीवनवृत्त से गुफित 'गांधी कथा' को प्रस्तुत करते हुए कथावाचक-गांधीवादी चिन्तक डॉ. शोभना राधाकृष्ण ने कहा कि गांधी साधारण व्यक्ति थे, लेकिन अपने कार्यों से असाधारण बन गए। उन्हें समझने के लिए हमें गांधी दर्शन को जीवन में उतारना होगा, गांधी को जीना होगा। गांधी का जीवन श्रद्धा और पुरुषार्थ का महाकाव्य है। सत्य उनकी श्रद्धा थी और अहिंसा उनका पुरुषार्थ।

गांधी सेवा सदन में उपस्थित बाल पीढ़ी तथा प्रबुद्ध नागरिकों को संबोधित करते हुए डॉ. शोभना ने कहा, 'राष्ट्रपिता गांधी ने एकाग्रता व आत्मविश्वास से सत्य का साक्षात्कार किया। सत्य मार्ग का अनुसरण करने से गांधी कभी डरे नहीं, वरन् अभयी बन हर चुनौती का सामना किया। वे सत्य, अहिंसा और प्रेम के अग्रदूत थे। उनका जीवन दर्शन आज भी जीवंत रूप में प्रासंगिक है। गांधीजी की ईश्वर में अटूट आस्था व विश्वास था। इसीलिए गांधीजी हर कार्य को ईश्वर का दिया हुआ मानकर चलते थे। बचपन में उन्होंने सत्यवादी राजा हरिशचन्द्र का नाटक देखा, जिससे वे बहुत प्रभावित हुए और सत्य मार्ग पर चलने का संकल्प किया। उन्होंने अपनी हर गलती को स्वीकारा और हर परिस्थिति को सकारात्मक रूप से देखा। गांधी की पहली सीख रही- अपने माता-पिता से झूठ मत बोलो। वे ही तुम्हारे सज्जे मार्ग दर्शक हैं।'

विदेशी दासता से मुक्त कराया

गांधी कथा के दौरान डॉ. शोभना ने कहा, 'अहिंसा और सत्याग्रह के मार्ग

राजसमंद. गांधी सेवा सदन में बुधवार को आयोजित गांधी कथा के दौरान बच्चों को संबोधित करतीं डॉ. शोभना राधाकृष्ण व मौजूद बच्चे।

पर चल कर गांधीजी ने वर्ष 1906 में एक नया अभियान चला कर दक्षिण अफ्रीका में जातीय भेदभाव को लेकर अंग्रेज सरकार द्वारा लाए गए वार्षिक कर के विरुद्ध जोहान्सबर्ग में सभी को एकत्र कर इतिहास में पहली बार अहिंसक संघर्ष के साथ जेल यात्रा की। अहिंसा और सत्याग्रह की इसी महिम को व्यापक स्तर पर भारत में चला कर उन्होंने भारत को विदेशी दासता से मुक्त कराया। दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी ने रस्किन की पुस्तक 'अन टू दी लास्ट' का अध्ययन किया और उससे प्रभावित होकर स्वयं को आम आदमी की सेवा में समर्पित कर दिया। दक्षिण अफ्रीका के बाद गांधी भारत आए और किसान की वेशभूषा में एक वर्ष तक भारत की यात्रा कर भारत को समझने का श्रमसाध्य कार्य किया। एक वर्ष की भारत यात्रा ने गांधी को आम आदमी के नजदीक ला दिया। वे साधारण बालक थे पर अपनी कर्मजा शक्ति से असाधारण बन गए। गांधीजी ने अहिंसा का पहला पाठ धर्मपत्नी कस्तूरबा से सीखा। उन्हें जो अज्जछा लगता उसे वे स्वीकारते और उस मार्ग पर चल पड़ते। विदेश जाने से पूर्व उन्होंने अपने सहपाठियों के मध्य ज्ञान, कर्म और भक्ति से युक्त भाषण दिया तो ब्रिटेन प्रवास के प्रथम माह में ही उन्हें सोचने को विवश कर दिया कि मैं कौन हूं और मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है? उनका जीवन श्रम व संयम का प्रतीक था।

भजनों ने मोहा मन

गांधी कथा में गांधी के प्रिय भजनों वैष्णव जन तो तेने कहिए जे पीड़ पराई जाने रे, रघुपति राघव राजा राम, मन-वाणी-कर्म में सत्य को तू घोल, रोग को मिटा के चलो, जाग नारी रे, शुभ मंगल हो, शुभ मंगल हो, लागी रे लगन-लागी रे लगन का संगान डॉ. शोभना के साथ मंजुलता शर्मा, सीता सालवी, हेमंत श्रीमाली, मोहम्मद अनस अर्शी, बाल संगायिकाओं ने किया तथा वाद्य यंत्रों से संगत कुणाल पंवार, गजेन्द्र माली ने की।

गांधी का पूरा जीवन प्रयोगशाला रहा

गांधी सेवा सदन के मंत्री डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने गांधीवादी प्रवक्ता डॉ. शोभना राधाकृष्ण का स्वागत करते हुए कहा- गांधी सेवा सदन के ऐतिहासिक प्रांगण में गांधीकथा वाचक डॉ. शोभना की उपस्थिति हमें प्रेरणा देती रहेगी। गांधी का पूरा जीवन एक प्रयोगशाला रहा, जहां उन्होंने जीवनपर्यन्त सत्य, अहिंसा, प्रेम, सत्याग्रह के प्रयोग किए और कहा मेरा जीवन ही मेरा दर्शन है। स्वार्थपरता के वशीभूत आज चारों ओर परिवार, जाति, वर्ग, प्रांत, भाषा और धर्म के नाम पर हिंसा का तांडव देखने को मिल रहा है। बढ़ती हिंसा के दंश से घर, परिवार, समाज, राष्ट्र और विश्व टूट रहा है। गांधीजी ने हमें अहिंसा के व्यापक स्वरूप-प्रेम से साक्षात्कार कराया।

वैष्णवजन भजन से शुरुआत

गांधी कथा का प्रारंभ गांधी के प्रिय वैष्णव जन तो भजन से हुआ। राकेश गांधी ने डॉ. शोभना का परिचय देते हुए कहा- शोभना का जन्म गांधीजी द्वारा स्थापित सेवाग्राम आश्रम में हुआ। बचपन में ही उन्हें गांधी के संस्कार मिले।देश-विदेश में गांधी दर्शन को प्रचारित करना ही इनके जीवन का उद्देश्य है। सदन के पदाधिकारी ललित बड़ोला, कालूहसन शाह, गणपत धर्मावत, गुणसागर कर्णावट एवं गांधीवादी जीतमल कज्जछारा ने डॉ. शोभना का अभिवंदन किया। आभार ज्ञापन ललित बड़ोला ने किया।